Dr. Vivek Ranga (April2023). Tradition of Music Teaching in India
***International Journal of Economic Perspectives*,*17*(04) 17-24**
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

भारत में संगीत शिक्षण की परम्परा

Dr. Vivek Ranga
Associate Professor of (Music Vocal)
Govt. College for Women, Karnal

सारांश:-

भारतीय संगीत शिक्षा की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। वैदिक काल में मंत्रों के गानों से लेकर महाकाव्य पुराण ब्राह्मण ग्रंथ आरण्यक एवं उपनिषदों से होते हुए आज यह तक पहुंची है। साथ ही शिक्षा की इस परंपरा ने मुगल एवं विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमणों को पार करते हुए अनेक उतार- चढ़ाव देखे हैं यह तो स्पष्ट है कि हमारी प्राचीन संगीत शिक्षा पद्धति सीना सीना एवं गुरुमुखी तथा गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत होती चली आ रही है भले ही आज संगीत गुरुकुल एवं घरानों से निकलकर आधुनिक शिक्षण संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में प्रवेश कर चुका है लेकिन शिक्षा की परंपरा ज्यों की त्यों बनी हुई है।

<u>मुख्य शब्दः संगीत, शिक्षा शिक्षण, परंपरा, भारतीय:-</u>

परम्परा की शक्ति सदा से असीम मात्रा में साहित्य , संगीत और कला को मिलती आई है। जिस भारतीय संस्कृति की हम उपासना करते है और जिसकी चिरकालिकता को हम इतना महत्त्व देते है। उसे बनाए रखने में परम्परा ही सहायक है। जहां परम्परा परिवर्तनशीलता का कारण है ; वही वह स्थिरता की भी आधारशिला बन जाती है परन्तु परिवर्तन प्रकृति का नियम इसी नियम अनुसार देश की सामाजिक , राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों में आए बदलाव का असर कला पर भी पड़ता है। इसी धारा में बहते हुए संगीत में युगानुसार परिवर्तन होते चले आए है।

<u>परम्परा अभिप्रायः</u> 'परम्परा' अपने आप में एक बहुत ही व्यापक अर्थ वाला शब्द है । 'परम' का अर्थ है श्रेष्ठ और 'परा' का अर्थ है उससे भी श्रेष्ठ । अर्थात् परम्परा के अन्तर्गत हमें अपने- पूर्वाचार्यों से जो कुछ प्राचीन धरोहर के रूप में प्राप्त होता है उसको उसी रूप में ग्रहण करके जब हम अपने ज्ञान एवं विवेक से उनमें कुछ और जोड़ते है तो उसकी समृद्धि होती है। इस प्रकार जो कुछ भी हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ है उसमें जो कुछ उत्तम एवं श्रेष्ठ है उसकी शुद्धता को बनाये रखते हुए उसमें कुछ और भी जोड़ दिया जाये तो वह और भी उत्तम और श्रेष्ठ बन जाता है और इसी प्रकार विकास का क्रम क्रमशः आगे बढ़ता रहता है। परन्तु परम्परा का अर्थ यह कदापि नहीं मानना चाहिये कि जो चला जा रहा है हम उसका अंधानुकरण करते चलें तथा उसमें कुछ भी परिवर्तन न करे। परिवर्तन तो जीवन का अनिवार्य तत्व है। यदि किसी परम्परा में विवेकपूर्ण परिवर्तन किया जाये तो उससे परम्परा और पुष्ट होती है, नष्ट नहीं होती। 'रेमन्ड विलियम्स भी अपनी पुस्तक 'की वुर्डस'

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**

Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

में परम्परा के संबंध में लिखते है कि "किसी भी चीज को परम्परा बनाने के लिए मात्र दो पीढ़ियों का वक्त लगता है।

शिक्षा: 'शिक्षा' एक सर्व परिचित एवम सर्वविदित शब्द है। वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा के प्रति जागरूक है अथवा जागरूक होने की चेष्टा करता है, क्योंकि उच्चकोटि की शिक्षा ही उत्कृष्ट व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के निर्माण की कसौटी मानी गई है।

भारत में संगीत शिक्षा की ऐतिहासिक परम्परा:

भारतीय संगीत में शिक्षा के प्रावधान का अभाव सर्वप्रथम वैदिक काल में अनुभव किया गया। वैदिक सामगान की निष्पत्ति हेतु अत्यन्त कड़े नियम थे और उनका उल्लंघन करना एक धार्मिक त्रुटि मानी जाती थी ये त्रुटिया न हो , इसलिए नवोदित गायकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता होती थी। सामगान को पूर्णतः नियमानुसार निष्पन्न करने की अनिवार्यता ने ही संगीत शिक्षा की अवधारणा को जन्म दिया और संगीत शिक्षण की विभिनन विधियां प्रचलित हुई। वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारत वर्ष में संगीत व उसकी शिक्षा का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार से है:-

1. वैदिक काल में संगीत शिक्षा:

वैदिक कालीन संगीत विषयक सामग्री पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि उस समय संगीत कला के क्रियात्मक व सैद्धान्तिक दोनों पक्ष सर्वोच्च तल पर प्रतिष्ठित थे। इतने उन्नत संगीत की कल्पना किसी शिक्षण विधि के अभाव में कभी संभव नहीं हो सकती। शिक्षा ग्रंथों में ऐसे संकेत निहित है जिनसे ज्ञात होता है कि आरम्भिक युग में वैदिक शाखा, ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद, सूत्र आदि विषयों का अध्ययन, अध्यापन उन विद्यालयों में होता था जिन्हें प्राचीन साहित्य में 'चरण' कहते थे। साधारण रूप से वैदिक साहित्य में साम प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित होने का संकेत मिलता है।

(1) पिता-पुत्र के रूप में,

(2) गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में

(3) गुरुकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करना ।

वैदिक काल में 12 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले को स्नातक, 24 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वाले को 'बसु' 36 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वाले को रूद्र ' तथा 48 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को 'आदित्य' कहा जाता था। शिक्षा सत्र श्रावण मास की पूर्णिमा से लेकर पोष मास की पूर्णिमा तक चलता था। वैदिक काल

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**

Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

में आधुनिक समय की भांति आर्थिक शुल्क का कोई प्रावधान नहीं था। शिक्षा प्रणाली में आज के समान परीक्षाओं की व्यवस्था नहीं थी। शिक्षा समाप्ति पर विधार्थी को विद्वानों द्वारा किए गए प्रश्नों के उत्तर देने होते थे।" इस प्रकार इस काल में विधार्थी का उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण करना न होकर ज्ञान प्राप्त करना होता था। इस प्रकार संगीत शिक्षा की सुचारू प्रणाली वैदिक काल में दृष्टिगोचर होती है।

(2) नारदीय शिक्षा में संगीत शिक्षा:

सामवेद जोकि वैदिक काल का सांगीतिक ग्रन्थ माना गया है के शिक्षा ग्रन्थों में नारदीय शिक्षा, गौतमी शिक्षा व लोमशी शिक्षा अधिक प्रचलित है। सामगान की विधि व शिक्षण प्रणाली का परिचय इन्हीं शिक्षा ग्रन्थों में प्राप्त होता है। तैत्तरीय उपनिषद् में शिक्षा ग्रंथों तदा याज्ञवल्क्य शिक्षा, माण्डूकीय शिक्षा, पाणी शिक्षा आदि ग्रंथों की रचना शिक्षा के व्यवस्थित रूप की दृष्टि से की गई थी। छह अंग वर्ण , स्वर, माता, बल, साम और सन्तान बतलाए हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि संगीत के क्रियात्मक रूप के साथ-साथ संगीत शास्त्र के ज्ञान का भी महत्वपूर्ण स्थान था । सामग पिता अपने पुत्रों को साम प्रशिक्षण देकर यज्ञ में ले जाते थे , जहाँ वे पिता द्वारा किए जाने वाले कर्म को सिखाते थे। नारद मुनि के अनुसार 6 से 16 वर्ष तक की आयु उतम मानी गई है। क्योंकि इस आयु में बालकों की कण्ठ तंत्रियों में लचीलापन होता है व साधना से इसे और मधुर बनाया जा सकता है। इस प्रकार हम देखते है कि इस काल में संगीत एक सुव्यवस्थित व स्थिर रूप था तथा संगीत कला शिक्षक का ए

(3) महाकाव्य काल में संगीत शिक्षा:

इस काल का समय अनेक विद्वानों ने लगभग 400 से 300 वर्ष ईसा पूर्व माना है। इस काल में अनेक महाकाव्य लिखे गए जिनमें से 'रामायण' एवम् 'महाभारत' अत्याधिक प्रसिद्ध हुए तथा ये महाकाव्य अपने काल में प्रचलित संगीत के स्वरूप का भली- भंति वर्णन करते हैं। रामायण काल में संगीत शिक्षा पूर्ववत् अर्थात् वैदिककाल की ही भांति दी जाती थी। श्री रामचन्द्र के पुत्रों लव व कुश ने महर्षि बाल्मीकि को गुरूत्व प्राप्त कर अन्य विधाओं के साथ संगीत कला को भी पूर्ण श्रद्धा से सीखा था। महाभारत काल में भी पूर्व कालों की भांति संगीत कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु सुव्यवस्थित ढंग से गुरु शिष्य परम्परा के रूप में ही शिक्षण हुआ करता था। धनुर्धर अर्जुन द्वारा इन्द्र के आदेशानुसार चित्रसेन गन्धर्व से गायन, वादन तथा नृत्य सीखने का वर्णन वनपर्व के 44 वें अध्याय के तीसरे श्लोक में मिलता है। अर्जुन ने राजा विराट की पुत्री को संगीत वाद्य की शिक्षा प्रदान की। इस प्रकार महाकाव्य काल संगीत शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था राजाओं के दरबार में भी होती थी परन्तु शिक्षण प्रणाली के रूप में इस काल में भी गुरु-शिष्य प्रणाली प्रचलित थी।

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**
Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

बौद्धकाल में संगीत शिक्षा

बौद्ध काल से पूर्व जैनकाल (ई.पू. 528 वर्ष) हमें इतिहास के पृष्ठों पर प्राप्त होता है। इस काल में भले ही हिन्दू धर्म के नियमों में शिथिलता आने के कारण संगीत व अन्य विधाएं ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य जन साधारण को भी प्राप्त हुई परन्तु संगीत शिक्षण सम्बन्धी कुछ विशेष साहित्य प्राप्त नहीं होता है। बौद्धकाल में 'तक्षशिला' विधा दान का प्रमुख केन्द्र था। बौद्ध काल में शिक्षण के विकास में अनेक क्रियाकलाप हुए। उस समयक अभिन्न अंग बन चुकी थी। संगीत के प्रति अत्यन्त जागरूकता अपनाई जाती थी। इस बात का प्रमाण हमें री राधाकुमुद मुखोपाध्यायय ' में मिलता है। इसके अन्तर्गत नालन्दा विक्रमशिला तथा तदन्तपुरी जैसे अन्य विश्वविद्यालयों में भी गान्धर्व का स्वतन्त्र निकाय अथवा फैक्लटी थी तथा इसके अधिष्ठताओं के रूप में भारत के विख्यात संगीतज्ञों की नियुक्ति हुआ करती थी। संगीत के इस विकास के साथ संगीत शिक्षा भी विकसित होती गई। पूर्व मध्यकाल में 'घराना शिक्षा पद्धति ' का बीजारोपण हर्षवर्धन के पश्चात् का समय भवन काल कहलाता है। यह काल प्राचीन काल के अन्त व मध्यकाल के प्रारम्भ का काल था । इसी कारण यह काल पूर्ण मध्यकाल कहलाया। इस समय सम्पूर्ण भारत छोटे-छोटे भागों में विभाजित हो गया था तथा सदा ये स्वतंत्र खण्ड आपस में शुद्ध के लिए तत्पर रहते थे। ऐसी स्थिति में संगीत भी कई वर्गों में विभक्त हुआ तथा सभी संगीत का विकास अपने-अपने दृष्टिकोण से करने लगे। इस प्रकार संगीत की कई शैलियां विकसित गई जिन्हें आगे जाकर 'घराना' की संज्ञा दी जाने लगी। इस शिक्षण पद्धति में शिष्यों को तालीम तो अति उम्दा ढंग से दी जाती थी परन्तु उस्ताद एवम् गुरुजन अपने वंशजों व निकट सम्बन्धियों तथा मुख्य-मुख्य शिष्यों को प्रशिक्षण देने में अधिक उदारता का प्रमाण देते थे। इसके परिणामस्वरूप संगीत कला में कुछ संकीर्णता आ गई परन्तु कुछ भी कहा जाए, इन घरानों के उद्भव से उस समय की राजनैतिक आपा-धापी के वातावरण में भी संगीत सुरक्षित रह पाया।

मध्यकाल में संगीत शिक्षाः

सन् 647 ई. से असीम वर्षो में भारत के छोटी-छोटी रियासतों में हुए विभाजन व आपसी प्रतिस्पर्धा की भावना का प्रभाव संगीत कला पर भी पड़ा। इसके परिणामस्वरूप संगीत का आध्यात्मिक व कलात्मक पक्ष क्षीण होने लगा एवम् इसके द्वारा श्रृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति होने लगी। इस समय जनसाधारण के लिए किसी प्रकार की संगीत शाला अथवा विद्यालय की व्यवस्था राज्य की ओर से नहीं पाई गई। इससे स्पष्ट होता है कि संगीत शिक्षण संगीतज्ञों, संगीतकारों आदि से व्यक्तिगत रूप से ही ग्रहण किया जाता था। ये कलाकार संगीत कला की शिक्षा प्रदान करने का एकमात्र साधन होने का कारण अति संकीर्ण मानसिकता के धारण हो गए थे और अपनी कला को अपने अथवा अपनी सन्तान व कुछ प्रमुख शिष्यों तक ही सीमित रखना चाहते थे। परन्तु

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**
Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

संगीतकारों की ऐसी विचारधारा होने पर भी रियासती शासकों में संगीत के प्रति श्रद्धा परिणामस्वरूप संगीत रूपी दीपशिक्षा प्रज्जवलित होती रही।

मध्यकालीन संत एवम् संगीत शिक्षा : भाव के मुस्लिम काल में संगीत की राजसी दशा का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मध्यकाल में संगीत विलासिता व मनोरंजन की विषय वस्तु मात्र रह गया था। परन्तु इस समय कुछ ऐसे भारतीय व सूफी आदि सन्त, भक्ताचार्य, धर्मप्रचारक व उपदेशक हुए जिन्होंने संगीत कला की आत्मा अर्थात् संगीत के आध्यात्मिक पक्ष को बनाए रखा। इन संतों में कबीर , चैतय महाप्रभु व - वैष्णव सम्प्रदाय के भक्तों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मध्यकाल में भारतीय संगीत का आध्यात्मिक व नैतिक रूप सन्तों व धार्मिक सम्प्रदायों में ही सुरक्षित रह गया। इस परम्परा में संगीत शिक्षा ' ईश्वर भक्ति के. लक्ष्य से प्रदान की जाने लगी तथा भिन्न साम्प्रदायिक सन्तो द्वारा संगीत शिक्षा दी जाने लगी। सन्त परम्परा द्वारा संगीत कला की शिक्षा भक्ति भाव तथा संगीत की सूक्ष्मताओं दोनों को ही समन्वित करने के लिए दी जाने लगी। मध्यकाल में शारङ्गदेव कृत संगीत रत्नाकर पं. लोचन कृत राम तरङ्गिणिनी , पं. अहोबल कृत 'संगीत पारिजात' रामामात्य द्वारा रचित 'स्वरमेल कलानिधि', पं. पुण्डरिक विट्ठल कृत 'सद्राम चन्द्रोदय' रागमाला राम मंजरी, नर्तन निर्णय आदि ग्रंथों की विषय साम्री संगीत शिक्षण की महत्वपूर्ण निधि थी। परन्तु मध्यकाल के अन्तिम वर्षों में आते-आते संगीत विलासिता की वस्तु बनकर रह गया। इस काल में संगीत शिक्षण में महत्वपूर्ण परिवर्तन 'घराना' शिक्षण पद्धति के कारण आया।

घराना शिक्षण : मध्यकाल के अन्तिम चरणों में 'घराना' शिक्षण पद्धति चर्मोत्कर्ष पर थी। इसका सम्बन्ध वर्तमानकाल में प्रचलित ख्याल गायकीसे है अर्थात ख्याल गायन की विभिन्न शैलियों को ही घरानों की संज्ञा दी गई। घराना पद्ध ति के प्रारम्भिक काल में चार घराने ग्वालियर, आगरा, जयपुर व किराना स्थापित हुए तथा इसके पश्चात् ख्याल गायकी के अनेक घरानों की स्थापना हुई। 12 घराना परम्परा में शिक्षण अत्यन्त गहन और वास्तविक होता था। इसी कारण इसमें कुशल शिष्य ही कलाकार बनकर निकलते थे। इ स परम्परा में गण्डा बंधन' समारोह के बाद प्रथम पाठ स्वर साधना से प्रारम्भ होता था, जिसमें सुर का भरना, आवाज लगाने का ढंग, आवाज का उतार-चढ़ाव, स्वर प्रयोग आदि की शिक्षा दी जाती थी। एक ही राग को वर्षों तक सिखाने की परम्परा थी। घरानेदार गुरुओं का दृढ़ विश्वास था कि एक राग के सीखने से दूसरे सभी राग स्वतः ही आ जाते हैं घरानों के द्वारा संगीत की संवृत्ति तो हुई , पर उसे थोड़े से व्यक्तियों में सीमित कर उसकी प्रगति को अवरूद्ध कर दिया।

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**
Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

अंग्रेजों के आगमन पर शिक्षण:

अंग्रेजों के शासन की स्थापना के साथ-साथ संपूर्ण शि क्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन हुआ। विदेशी शासकों की शिक्षा नीति के कारण शिक्षा के सारे ढांचे का पाश्चात्यीकरण हुआ। मानवीय एवं विज्ञान विषयों के समान ललितकलाओं और संगीत की शिक्षा गुरुकुल पद्धति के स्थान पर स्कूलों , महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में सामूहिक रीति से प्रारम्भिक हो गई। संस्थागत शिक्षण आज एक प्रकार से युग की मांग बन गया है। संगीत के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए देश की विभिन्न संस्थाओं में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, एकल गायन वादन , वृन्दवादन आदि के प्रशिक्षण का प्रावधान हो गया। 13 शिक्षण संस्थाओं में दी जा रही संगीत की सामूहिक शिक्षा से लाभ तो अवश्य हुआ है किन्तु समस्याएं भी उभरकर सामने आई हैं। आज संगीत शिक्षा के सूक्ष्म व विशिष्ट अंगों पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना कि निर्धारित पाठ्यक्रम की औपचारिकता को पूरा करने पर इसके अतिरिक्त प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा में निहित श्रद्धाभाव, सेवाभाव, एकाग्रता, साधना,लगन, कठोर परिश्रम आदि समाप्त हो गई है।

संगीत व संगीत शिक्षण का पुनः सूर्योदय: (संगीत शिक्षा का आधुनिक काल)

जिस प्रकार रात्रि की कालिमा के पश्चात् सूर्य की जीवनदायी किरणें हर्ष उल्लास व आशाएँ लेकर आती है उसी प्रकार ब्रिटिश काल में संगीत कला पर आच्छादित कालिमा का भी ह्रास हुआ। मौलाबख्स (लगभग सन् 1880 ई.) पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर व पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे आदि महान विभूतियों के प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत में संगीत शिक्षा निष्पक्षतः प्रत्येक इच्छुक व जिज्ञासु को सहजता से प्राप्त हुई और घरानेदार उस्तादों की संकीर्ण प्रवृत्तियों का आधिपत्य समाप्त हुआ।

(i) पं. विष्णु दिगम्बर द्वारा संगीत शिक्षण का विकासः 19वीं शताब्दी में संगीत की डगमगाती नौका को सम्भालने में पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने मिरज पण्डित बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर से सन् 1815 में संगीत शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् की स्थिति होते हुए भी संगीत प्रचार हेतु स्थान-स्थान भ्रमण किया। पण्डित जी ने 1901 में लाहौर में तथा 1908 में मुम्बई में संगीत शिक्षण हेतु गांधर्व महाविद्यालय' नामक संस्था की स्थापना की। पण्डित जी ने संगीत शिक्षण व प्रचार-प्रसार हेतु अनेक ग्रन्थों की रचना की जैसे राग प्रवेश, बाल बोध, बाल प्रकाश, महिला संगीत, संगीत शिक्षा आदि हैं। 414

(ii) पं. विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा संगीत शिक्षण का विकास पं. विष्णु नारायण भातखण्डे (सन् 1872 से 1931 ई. तक) पूर्ण रूप से संगीतकला को समर्पित थे। इन्होंने संगीत शिक्षण हेतु अनेक ग्रन्थों की रचना की व प्रकाशन कराया। हिन्दुस्तानी स्वरलिपि पद्धति संगीत जगत को इन्हीं की देन है। इनके द्वारा लिखित

© 2023 by The Author(s). (cc) BY ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**
Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

'भातखण्डे संगीत पद्धति, क्रमिक पुस्तक मलिका' जोकि छः भागों में विभक्त है संगीत जगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। 1925-26 में इन्होंने लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की अब इस कालेज को 'भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। 15 इस प्रकार पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे के प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत में संगीतकला का पुनः सूर्योदय हुआ। संगीत शिक्षण विश्वविद्यालय स्तर तक पहुंचा। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय व इलाहाबा द विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम संगीत को बी. ए. के पाठयक्रम में स्थान दिया। समय के साथ-साथ संगीत में पीएच. डी. डी.लिट् की उपाधि का प्रावधान भी होने लगा। कुछ विश्वविद्यालय तो मूलत: संगीत शिक्षण हेतु ही स्थापित किए गए है जिनमें विश्व भारती (बंगाल) व 'इन्द्राकला संगीत विद्यालय प्रमुख हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् संगीत शिक्षण में अनेक प्रगति कारक कार्य दिखाई देते हैं। संगीत नाटक अकादमी की स्थापना आकाशवाणी व दूरदर्शन में संगीत कार्यक्रमों की व्यवस्था , संगीत के अन्तर्राष्ट्रीय विकास हेतु अनेक प्रयास (सांस्कृतिक शिष्टमण्डल आदि), अखिल भारतीय स्तर पर संगीत सम्मेलन व गोष्ठियां, सांगीतिक ग्रन्थों व पत्रिकाओं का प्रकाशन, विधार्थियों को छात्रवृतियां प्रदान करना राष्ट्रपति पुरस्कारों द्वारा कलाकारों को सम्मान प्रदान करना आदि, अनेक साहसी कार्य सरकार द्वारा संगीत व संगीत के शिक्षण को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक उपकरणों जैसे टेपरिकॉर्डर, सी.डी. कम्प्यूटर आदि की सहायता से आज के युग में संगीत की दूरस्थ शिक्षा भी सम्भव हो ही गई है जिसका उचित प्रयोग लाभकारी परिणाम दे सकता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत शिक्षा परम्परा प्राचीनकाल से पीढ़ी-दर-पीढ़ी , विभिन्न युगों से गुजरती हुई वर्तमान समय तक पहुंची। वर्तमान समय में संगीत का जो स्वरूप दिखाई दे रहा है वह एक रूप से संगीत शिक्षण परम्परा की ही देन है। इसी माध्यम के द्वारा संगीत विषय को सुरक्षित एवम् सुसंस्कृत स्वरूप प्राप्त हुआ है संदर्भ सूची

1. सीमा जौहरी, संगीतायन, प्रथम संस्करण-2003, पृ. 127

2. डॉ. कु. आकांक्षी, भारतीय संगीत और वैश्वीकरण, प्र.सं. 2011

3. वही

4- Ramond Williams, Keywords Panguin Books London, p. 268

5. संगीत पत्रिका, जनवरी 2007, पृ. 69

6. डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपे, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.39

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**

Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023

7. डॉ. पूनम दत्ता, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य, प्रथम संस्करण 2005, पृ. 40, 42

8. मधुवाला सक्सेना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, पृ. 46 47

9. मधुबाला सक्सेना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं वर्तमान स्तर, पृ. 56 उसका

10. पूनम दत्ता, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य, प्रथम संस्करण, 2005, 45, 46

11. पूनम दत्ता, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य, प्रथमः संस्करण, 2005, पृ. 47

12. आचार्य बृहस्पति, मुस्लमान और भारतीय संगीत, पृ. 111

13. डॉ. मधुवाला सक्सेना, भारतीय संगीत की शिक्षा प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, पृ. 75, 76

14. अमिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत का विकास , पृ. 19115. डॉ. पूनम दत्ता, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य, प्रथम संस्करण, 2005, पृ. 57, 58

16. डॉ. पूनम दत्ता, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य प्रथम : संस्करण, 2005, पृ. 57, 58

© 2023 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Vivek Ranga**
Submitted: 27JFeb 2023, Revised: 09 March 2023, Accepted: 18 March 2023, Published: April 2023